ISSN : 2581-8848

घुमन्तू जनजातियों का सांस्कृतिक दर्शन

नेता चांगदेव देशभ्रतार
शोधार्थी
म.गां.अं.हिं.वि.वर्धा (महाराष्ट्र)
E-mail- nitadeshbratar@gmail.com

सारांश

घुमन्तू जनजाति व्यवसाय के लिए भारत के विभिन्न प्रांतो में फैला हुआ है। लेकिन भिन्न-भिन्न प्रांतो में उनके नाम तथा व्यवसाय के भी भिन्न स्वरूप दिखाई देते है। विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है की महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा आंध्र प्रदेश में यह जनजाति 'बंजारा' नाम से ही प्रचलित है। लेकिन कुछ क्षेत्र में इन्हें 'लमाणी' या 'लंबाड़ी' भी कहा जाता है। बंजारा समुदाय यह आनंद और उत्साह से भरा हुआ है। इस जनजाति की काफी विशेषताएँ भी है। व्यापार से लेकर देशप्रेम और देशसेवा एवं अपनी हजारों सालों से चली आ रही संस्कृति का संरक्षण यह अतीत एवं ऐतिहासिक दृष्टि से गर्व की बात है।

बीज शब्द- विमुक्त, घुमन्तू, जनजाति, बंजारा, संस्कृति।

प्रस्तावना

विमुक्त घुमन्तू जनजातियाँ भारत वर्ष की ऐसी जातियाँ है जिनका संबंध प्रत्यक्ष रूप से प्राचीनकालीन इतिहास जुड़ा हुआ हैं। आज़ादी के पश्चात भी भारत तथा अन्य देशों में भी इस जनजातियों ने अपनी संस्कृति की सुरक्षा एवं संवर्धन करने के लिए अपने जीवन में निरंतर संघर्षपूर्ण दिखाई देती है। य जनजातियाँ अपने आप में एक पूरी जीवन शैली और संस्कृति को समेटे हुए है। यह संबोधन सुनते ही एक ऐसे व्यक्ति अथवा समुदाय की छबी मस्तिष्क में उभरती है जो घुमक्कड़, अस्थाई डेरा डालने वाले, रंग-बिरंगे, चमकीले कपड़े, चांदी के आभूषण और छोटी-मोटी चींजो का व्यापार करनेवाले हो। आज भी विमुक्त घुमन्तू जनजातियाँ भटकती हुयी दिखाई देती है। वह अपने जीवन-यापन के लिए संघर्ष कर रही है। फिर भी अपनी कला एवं संस्कृति का हजारों वर्षों से चली आ रही परंपरा का जतन कर अपनी संस्कृति का परिचय देती है।

प्रस्तुत शोधालेख में ऐसे ही अस्थाई रूप से जीवन-यापन कर रही घुमन्तू समुदाय की संस्कृति के परिचयात्मक रूप को संक्षिप्त में स्पष्ट करने का एक प्रयास किया गया है।

- **घुमन्तू जनजातियों का इतिहास**

समग्र विश्व में हमें घुमन्तू जनजातियों का इतिहास मिलता है। लेकिन हम भारत देश की बात करें तो यहाँ बंजारा, पारधी, वडार, परदेशी, धनगर एवं घिसाड़ी जनजातियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती है। यह जनजातियाँ मध्य भारत, ईशान्य भारत, पश्चिम तथा दक्षिण भारत और हिमालयी क्षेत्र में आज भी अस्थाई रूप से देखने को मिलती है। इन्हीं जनजातियों में से एक 'बंजारा' घुमन्तू जनजाति है जिसका अध्ययन आज भी किया जा रहा है। 'बंजारा' समुदाय के ऐतिहासिक अध्ययन से यह पता चलता है की इस समुदाय का उगम विशेष रूप से राजस्थान, मध्य प्रदेश औ मध्य एशिया खंड से हुआ। यह विचार भिन्न विद्वानों द्वारा रखे गए है। ऐतिहासिक दस्तावेजों को अगर हम देखते है तो उनमें काफ़ी जगह 'बंजारा' शब्द का प्रयोग चलते-फिरते व्यवसाय करने वालों के रूप में किया गया है। साथ ही काव्य, लोकगीतों और अन्य रचनाओं में भी 'बंजारा' शब्द सुनाई देता है। जैसे की संत कबीर द्वारा लिखित रचनाओं में भी 'बंजारा' शब्द का दर्शन होता है।

''मैं बंजारा ले इक तारा
घूमा भारत सारा।''
और
''एक बंजारा गाये, जीवन के गीत सुनाये
हम सब जिने वालों को जिने की राह बतायें।''

ISSN : 2581-8848

इस प्रकार की काव्य रचनाओं में हमें 'बंजारा' शब्द का वर्णन मिलता है। जिसका अर्थ घुमन्तू एवं निरंतर भटकने वाला होता है। लेकिन अध्ययन से तथा विभिन्न विद्वानों के वास्तविक एवं तार्किक आधार पर 'बंजारा' को लेकर अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये गए है। जैसे की- १) जमिन पर टांडा बनाकर रहने वाले जनजाति को 'बंजारा' कहते है। २) बन+जारा= बनजारा ३) बन एवं जंगल में घुमन्तू करने वाली जनजाति- बंजारा। डॉ. मोहन चव्हाण लिखते है- ''बंजारे बैलों के समुदाय के साथ-साथ चलते है। उनको देखने से पता चलता है कि उनकी पीड़ा कैसी है? बैलों और जानवरों के जीवन में जो पशुता है वह बंजारों के जीवन में कूट-कूट कर भरी हुई नजर आती है। पशुओं के जैसे निवास-आवास नहीं एवं कोई सहारा नहीं वैसे ही बंजारो के लिए गगन ही सहारा है, वे पशुवत जीवन गुजारते है।''

उसी प्रकार काव्य रचनाओं द्वारा भी हमें 'बंजारा' शब्द का अर्थ स्पष्ट रूप से समझ में आता है। जैसे-

''टुकसिया हवा को छोड़ मिया,
मत देस-विदेस फिरे मारा
का जाक अजल का लुटे है,
दिन-रात बजा कर नक्कारा,
क्या गेहूँ, चावल, मोठ, मटर,
क्या आग धुआ और अंगारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा,
जब लाद चलेगा बन जारा ''।

- **'बंजारा' घुमन्तू जनजाति का सांस्कृतिक परिचय**

यह घुमन्तू जनजाति व्यवसाय के लिए भारत के विभिन्न प्रांतो में फैला हुआ है। लेकिन भिन्न-भिन्न प्रांतो में उनके नाम तथा व्यवसाय के भी भिन्न स्वरूप दिखाई देते है। विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है की महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा आंध्र प्रदेश में यह जनजाति 'बंजारा' नाम से ही प्रचलित है। लेकिन कुछ क्षेत्र में इन्हें 'लमाणी' या 'लंबाड़ी' भी कहा जाता है। बंजारा समुदाय यह आनंद और उत्साह से भरा हुआ है। इस जनजाति की काफी विशेषताएँ भी है। व्यापार से लेकर देशप्रेम और देशसेवा एवं अपनी हजारों सालों से चली आ रही संस्कृति का संरक्षण यह अतीत एवं ऐतिहासिक दृष्टि से गर्व की बात है।

वंश

बंजारा समुदाय में वंश के आधार पर वंशावली निश्चित होती है। इसे 'गोत्र' कहा जाता है। जिसमें अलग-अलग प्रकार के गोत्र या वंशावली है- १) राठौड़ वंश २) तुरी वंश ३) पवार वंश ४) चव्हाण वंश ५) जाधव वंश ६) सेकसात जंगी वंश ७) गोलावत भंगी 'गोत' ८) आडे वंश

वेशभूषा

बंजारा समुदाय यह अपने विशिष्ट वेशभूषा से समग्र देश में पहचाना जाता है। इसमें पुरूष एवं स्त्रियों की वेशभूषा भिन्न प्रकार की होती है।

पुरूष वेशभूषा - पुरूषों की वेशभूषा में सिर पर पागड़ी विशेषत: लाल, सफ़ेद, केसरी रंग की बाँधते है। इसे अत्यंत महत्वपूर्ण दर्जा दिया जाता है। झगला परिधान किया जाता है। अर्थात् हिंदी में कमिज। झगला के नीचे धोती भी अलग-अलग ढंग से पहन लेते है। 'चोळणा' आज भी लमाणी समुदाय के पुरूष वर्ग द्वारा पहना जाता है।

स्त्री वेशभूषा – बंजारा स्त्री या नारी की वेशभूषा को अत्याधिक महत्व दिया जाता है। बंजारा स्त्रियों की वेशभूषा बहुत ही आकर्षक और वैशीष्टयपूर्ण होती है। विविध रंगो वाली ओढणी जिसे पामडी कहा जाता है, परिधान करती है। जिस पर अत्याधिक सुंदर एवं आकर्षक शीशे और रंगबिरंगे धागों से कढ़ाई और बुनाई होती है। इससे बंजारा नारीयों में कलात्मकता एवं कौशल्य का गुण प्रतीत होता है।

''माथे पर लाल-लाल पामडी
पामडीन आर सीरो घुंगटो।
काई खलरोये ओन घुंगटो।

 ISSN : 2581-8848

मत आय दो ये झुलरे मा,
मन बी नाचे दो झोकेती।
काई खलरोये ओन घुंगटो।।''

काचळी अर्थात चोली जो छाती से लेकर नाभी तक के शरीर को ढँकने के लिए पहनती है। इसपर भी शीशे जड़े होते है। पीछले भाग पर डोर होती है जिससे काचळी बाँधी जाती है।

बंजारा स्त्री के आभूषण

बंजारा घुमन्तू जनजातियों की महिलायें भारत में अन्य समुदाय की महिलाओं की तुलना ज्यादा आभूषण पहनती है। यह महिलायें सिर से पैर तक आभूषण पहनती है। हाथों में हस्तीदंत की चुडियाँ विवाह के पश्चात पहनायी जाती है। बाजुओं में 'कसवटया' नामक गहना पहनती है। घुगरी, कनियाँ, अंगुठियाँ, रूपियार हार, आटी आदि गहने पहनकर अपना सौंदर्य बढ़ाती है।

गोंदना जिसे बंजारा महिलायें खणणा कहते है यह सौंदर्य का प्रतिक माना जाता है। बंजारा स्त्री अपने शरीर पर माता-पिता, भाई का नाम हाथोंपर गोंद कर लेती है जिससे उसका परिवारके प्रति स्नेह और प्रेम झलकता है।

तांडा संस्कृति

घुमन्तू जनजातियों के लोग अस्थाई रूप से अपनी-अपनी बस्ती बसाकर रहते है जिसे 'तांडा' कहा जाता है। कई तांडो में झोपड़ीयों के बीच छोटे-छोटे खेती भी होते है। एक तांडे में लगभग ३० से अधिक झोपड़ीयाँ या घर होते है। परिवार जैसे-जैसे बढ़ता है तांडा अधिक विस्तृत होता है। सभी घर के दरवाजे मुख्यरूप से पूरब दिशा में होते है। घर के सामने ही पशुओं को बाँधने की व्यवस्था होती है। तांडा में मध्य जगह पर तांडा के प्रमुख नायक का घर होता है। तांडो पर समूचा समुदाय नायक के आदेश पर चलता है। बंजारों की तांडा संस्कृति में कुछ विशिष्ट लोगों को महत्वपूर्ण दर्जा दिया जाता है। जैसे की १) नायक जो प्रमुख होता है, २) कारभारी जो नायक का आदेश निवासियों तक पहुँचाने का कार्य करता है, ३) हसाबी यह दिवानी मामलों में नायक की सहायता करता है, ४) नसाबी जो अपराधोंकी जाँच में नायक की सहायता करता है।

बोली-भाषा

सामान्यत: बंजारा समुदाय आपस में व्यवहार करने के लिए बंजारा बोली का ही प्रयोग करते है। व्यापार के लिए यह समुदाय देश-विदेशों में घुमता रहा। इसलिए आज बंजारा बोली में आर्य भाषा, संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी अनेक ध्यनियों का प्रयोग दिखायी देता है। भारत में महाराष्ट्र, गुजरात, तेलगु आदि प्रांतीय भाषाओं से भी बंजारा बोली प्रभावित हुयी है।

खान-पान

बंजारा समुदाय का खान-पान में प्रांत का अनुसरण करते है। जैसे की आंध्र में बाजरा, महाराष्ट्र में जवार, खिचड़ी, गेहूँ या मक्के की मोटी रोटी जिसे 'बाटी' कहते है। बंजारों का प्रिय खाद्य 'गलवाणी' है। धार्मिक समारोह, देवी-देवताओं के भोग के लिए मांस चढाया जाता है। बंजारा समुदाय शाखाहारी तथा मांसाहारी संमिश्र खान-पान रखते है। धार्मिक उत्सव, विवाह समारोह आदि अवसरों पर मदिरापान या सुरापान किया जाता है।

जन्म संस्कार

बंजारा समुदाय में गर्भावस्था से ही संस्कार आरंभ होते है। समुदाय में मान-सम्मान हेतू मातृत्व प्राप्त करना बहुत जरूरी है। लड़का हुआ तो नगाड़ा और लड़की हुयी तो थाली बजायी जाती है। खीर तथा कच्चा नारीयल तांडे के प्रत्येक घर में पहुँचाया जाता है। सभी स्त्रियाँ एकत्रित होकर नवजात शिशु को आशिष देती है और गीत गाती है।

विवाह संस्कार

इस संस्कार को बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। विवाह को 'वाया' कहते है। नायक के द्वारा विवाह की चर्चा आरंभ होती है जिसमें दोनों परिवार के सदस्य भी उपस्थित होते है। सगा, साडी, हुक्का, गुलपान, भोजन, मीठा भोजन आदि कार्यक्रम तथा वधु के यथोचित स्वागत के साथ विवाह संस्कार पूर्ण होता है।

मृत्यु संस्कार

मृत्यु के पश्चात् आत्मा की शांति के लिए मृत्यु संस्कार पूर्ण किया जाता है। अविवाहित या बालक के मृत्यु होने पर उसे जमीन में दफनाया जाता है। अगर विवाहित की मृत्यु हुयी तो उसके शरीर को अग्नि दिया जाता है। जिसे 'दाह' संस्कार कहते है। साथ मृत्यु के दसवे दिन 'दसक्रिया' और तेरहवे दिन 'तेरहवी' के संस्कार भी किये जाते है।

- **त्यौहार**

बंजारा जनजातियों में त्यौहारों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह समुदाय बड़े उत्साह एवं हर्षोल्हास के साथ त्यौहार मनाते है।

तीज

बंजारा समाज में तीज त्यौहार को नौ दिनों तक कुँवारी लड़कियाँ टोकरी में बोये गये गेहूँ को नदी या कुएँ के पानी से सींचती है। इसे 'जवारा' भी कहते है। सभी लड़कियाँ अपनी-अपनी टोकरीयाँ नायक के घर जाकर कुछ गीतों एवं प्रार्थनाओं के साथ उनकी पूजा करती है।

''लकडीमा सुओ लांबोरे कन्हैयालाल।
तांडेरो नायक आचो रे कन्हैयालाल।
बेटी सारू तीज बोरारो रे कन्हैयालाल।
कुंवारी री भासीस लेरेरो कन्हैयालाल।''

प्रस्तुत गीत में कुँवारी लड़कियाँ अपने नायक की प्रशंसा कर रही है। नायक ने तीज त्यौहार की अनुमति दी इस खुशी में अपने प्रभू कन्हैयालाल को याद कर रही है। इसी प्रकार बंजारा समुदाय में **पोला, गोकुल अष्टमी, दिपावली, दशहरा, होली** के त्यौहार भी विशेष रूप से मनायें जाते है।

- **उपसंहार**

क्षेत्रकार्य के दौरान प्रत्यक्ष रूप से तांडो पर जाकर इस समुदाय की संस्कृति का गहन अध्ययन करने का अवसर मिला। जिसके माध्यम से बंजारा संस्कृति का एक अल्प परिचय इस शोधालेख के माध्यम से दिया गया है। प्रस्तुत शोधालेख में घुमन्तू जनजातियों के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। देश-विदेशों में व्यवसाय के लिए भ्रमण करने से यह संस्कृति प्रभावित हुयी है। आज भी यह समुदाय अपनी संस्कृति से जुड़ा है। जिसमें बोली-भाषा, खान-पान, रहन-सहन, जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार, विवाह संस्कार के दर्शन होते है। हर संस्कार पर लोकगीतों का दर्शन होता है। बंजारा समुदाय सामान्य रूप से किस तरह के त्यौहार एवं उत्सवों को बड़े हर्षोल्हास एवं आनंदमयी वातावरण में मनाते है। इसका विवरण भी किया गया है। यह समुदाय रूढी-परंपराओं के साथ अपनी संस्कृति की संवर्धन के लिए प्रयास कर रही है। आज सर्वत्र आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के नाम पर विश्व की कई जनजातियों की संस्कृतियाँ विलुप्त होती दिखाई दे रही है। समय के साथ-साथ बंजारा समुदाय पर भी इसका प्रभाव हमें देखने को मिलता है। जिसमें रहन-सहन अत्याधिक प्रभावित हो रहा है। बंजारा घुमन्तू जनजातियाँ आज भी अपनी संस्कृति का जतन कर रही है। यह बड़ी गर्व की बात है। आज निश्चित रूप से शिक्षा तथा नौकरी के कारण काफी लोग शहर में बस गए है। लेकिन फिर भी संस्कृति के सुरक्षा के लिए प्रयासरत है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान एवं भागीदारी बंजारा महिलाओं की है। जो लोकगीतों के माध्यम से अत्यंत भावपूर्ण और मार्मिक रूप से अपने संस्कृति का परिचय देती है।

संदर्भ सूची

१) अणे(राठोड़), कोमलसिंग लालसिंग (२०१८): बंजारा संस्कृती संक्षिप्त विचारधारा, शारदा प्रकाशन, ठाणे।
२) गुप्ता, रमणिका (२०१५) : विमुक्त-घुमन्तू आदिवासियों का मुक्ति-संघर्ष, कल्याणी शिक्षा परिषद, नयी दिल्ली।
३) चव्हाण, पंजाब (२००५) : बंजारा समाज दर्शन, संगत प्रकाशन, नांदेड।
४) जाधव, यशवंत (१९९२) : बनजारा जाति समाज और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
५) पवार, प्रा.डॉ. रूक्मिणी (२००५) : बंजारा लोकजीवन पद्धती, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद।
६) पाटील, बळीराम हिरामण, (२०१२) : बंजारा लोगोंका इतिहास, नवदुर्गा प्रकाशन, गांधीनगर गुजरात।
७) भगत, डॉ. राजकुमार (२०२१) : बंजारा समाजाचे अंतरंग, श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर।
८) राठोड, आत्माराम कनीराम (२०१४) : गोर बंजारा इतिहास व लोकजीवन, ऋचा प्रकाशन, नागपूर।

ISSN : 2581-8848

९) राठोड, डॉ. गणपत (२०११) : बंजारा लोकगीतों में नारियों का योगदान, नेहा प्रकाशन, अंबाजोगाई।
१०) राठोड, डॉ. गणपत (२०१५) : घुमन्तू जनजातियों का सांस्कृतिक अध्ययन, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर।
११) राठोड, डॉ. गणपत (संपादक)(२०१७) : लोकसाहित्य, शौर्य पब्लिकेशन, लातूर।
१२) राठोड, ग.ह. (२००८) : गोर बंजारा समाजाची ओळख, राजगुरू प्रकाशन, कचनेर।
१३) राठोड, डॉ. प्रकाश (संपादक)(२०१७) : लदेणी, गोर बंजारा प्रकाशन, कळमेश्वर, जि. नागपूर।
१४) राठोड, प्रा. डॉ. सुनील : बंजारा जमात लोकजीवन आणि लोकगीते, मधुराज प्रब्लिकेशन्स प्रा.लि., पुणे।
१५) राठोड, डॉ. सुभाष (२०१६) : बंजारा समाज गोरबोली आणि मौख्यिक वाड.मय, राष्ट्रीय बंजारा परिषद, नवी मुंबई।
१६) शर्मा, श्रीराम (१९८३) : बनजारा समाज, दक्षिण प्रकाशन, हैद्राबाद।

शोधप्रबंध:

१) राठोड, तुळशीराम (२०१०) : विदर्भातील ग्रामीण बंजारा स्त्रीचे सामाजिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक जीवनाचे अध्ययन-समाजकार्य मध्यस्थी विशेष संदर्भ: मंगरूळपीर (वाशिम जिल्हा), राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ, नागपूर।
२) साठे, स्मिता वसंत (२०१४) : बंजारा समाज परिवर्तन काल आणि आज, (स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्योत्तर कालखंड) वाशिम जिल्हयात स्थायिक झालेल्या बंजारा समाजाच्या विशेष संदर्भात, संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती।

साप्ताहिक, मासिकपत्र, त्रैमासिक, वार्षिक अंक, समाचार पत्र –

१) आडे, शंकर (फेब्रुवारी-२०१४) : बंजारा टाईम्स।
२) राठोड, मांगीलाल (दिवाळी अंक-१९९८) : बंजारा हिल्स (अनियतकालिक)
३) राठोड, मोतीराज (जुलै २००८) : बंजारा-धर्म (पत्रिका)